जीवन विज्ञान प्रशिक्षक कार्यकर्ता सेमीनार सम्पन्न

लाडनूँ 19 सितम्बर। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक कार्यकर्ता सेमीनार का शुभारम्भ पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में सुधर्मा सभा में हुआ। 'शिक्षा में भावात्मक विकास' विषय पर प्रकाश डालते हुए पूज्यप्रवर ने बी.एड. की छात्राओं एवं जीवन विज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से विशेष अपेक्षा करते हुए कहा कि जीवन विज्ञान के सैद्धान्तिक अध्ययन को विशेष रूचि के साथ अध्ययन करते हुए इसके प्रयोगों को अपने जीवन में उतारें। उन्होंने सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से समागत जीवन विज्ञान कार्यकर्ताओं को उनकी निःस्वार्थ सेवाओं के प्रति साधुवाद देते हुए उत्साह के साथ कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाते रहने की प्रेरणा दी। आपने प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी द्वारा जीवन विज्ञान के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्यों की अनुमोदना करते हुए कहा कि मुनिश्री जीवन विज्ञान को सुदृढ़ता प्रदान करने में सतत गतिशील हैं। आपने बजरंग जैन द्वारा ''जीवन विज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान'' तथा जीवन विज्ञान के विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों एवं योजना की रूपरेखा को उत्साही बताया।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने अपने वक्तव्य में विषय पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान शिक्षा पद्धति में मानसिक एवं भावात्मक विकास के आयाम को जोड़ने पर बल दिया। उन्होंने चेतना के विकास में भावों की शुद्धि को अनिवार्य बताते हुए कहा कि शरीर, मन एवं बुद्धि के विकास के साथ यदि भावात्मक शुद्धि नहीं हुई तो बाकी विकास अर्थरहित हो जाएंगे। आपने कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोग भावात्मक विकास में सहायक बन विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक, परिवार, समाज, राष्ट्र सबको सही दिशा देते हैं। जीवन में सही श्वास एवं सही मुद्रा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि जैसी मुद्रा होगी वैसे ही हमारे भाव होंगे।

अपने स्वागत भाषण में नैतिकता, ईमानदारी, अनुशासन आदि गुणों की चर्चा करते हुए जीवन विज्ञान प्रभारी बजरंग जैन कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के अवदान जीवन विज्ञान को जन–जन तक पहुंचाने में अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान का विशेष योगदान होगा। हम पूज्यप्रवर के आशीर्वाद से निश्चित रूप में सही दिशा में आगे बढ़ेंगे।

चैन्नई से समागत जीवन विज्ञान के विशिष्ट कार्यकर्ता राकेश खटेड़ ने 'साइंस ऑफ लिविंग' तथा 'आर्ट ऑफ लिविंग' के अन्तर को बताते हुए कहा कि जीवन के लिये दोनों ही महत्वपूर्ण है। दोनों का सामंजस्य जीवन विज्ञान में निहित है। कलात्मक जीवन के लिये जीवन के विज्ञान को समझना आवश्यक है। आपने बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था (विद्यार्थी जीवन) को संस्कार प्राप्ति का उपयुक्त समय बताया। इस उम्र में प्राप्त शिक्षा एवं संस्कार अमिट होते हैं, ग्रहणशक्ति भी तीव्र होती है। नकारात्मक भावों से हिंसा, उपद्रव एवं कलह तथा सकारात्मक भावों से सृजन होता है। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री कुमारश्रमणजी ने किया। समारोह में श्रद्धालु श्रावकों के साथ–साथ स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के अध्यापक एवं जैन विश्व भारती संस्थान द्वारा संचालित बी. एड. कॉलेज की छात्राएं भी उपस्थित थीं।

मुनिश्री किशनलालजी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आगन्तुक संभागियों को साधुवाद दिया और कहा कि हमारे कार्यकर्ता पूर्ण निष्ठा के साथ जीवन विज्ञान प्रचार–प्रसार में लगे हुए हैं। अपने उद्‌बोधन में प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनिश्री ने फरमाया कि जो कार्य चल रहे हैं, उनकी निरन्तरता बनाये रखते हुए धीरे–धीरे नया रूप प्रदान किया जाये। अपेक्षित स्थानों पर नई जीवन विज्ञान अकादमियों की स्थापना हो। कम से कम नये क्षेत्र में एक–दो कार्यकर्ता संयोजक, सह–संयोजक के रूप में जुड़कर जिम्मेदारीपूर्वक कार्य को गति दें। समाज की सक्षम संस्थाओं का, विशेषकर तेरापंथ युवक परिषद का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। जहाँ 20–25 व्यक्ति प्रशिक्षण के लिये तैयार होते हैं, उन्हें स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित करने की व्यवस्था की जा सकती है। वहां केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी से प्रशिक्षक भेजे जा सकते हैं। मंगलपाठ के साथ सेमीनार सम्पन्न हुआ।

प्रेषक –
हनुमान मल शर्मा
जीवन विज्ञान अकादमी,
केन्द्रीय कार्यालय,
जैन विश्व भारती, लाडनूँ